दैनिक
राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक

लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद,आजमगढ़, झांसी, एटा,औरैया, अमेठी,बलरामपुर, फतेहपुर, बांदा, उन्नाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर,जौनपुर,श्रावस्ती,उरई,जालौन, फिरोजाबाद,हरदोई, मथुरा,कानपुर,ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर,सिद्धार्थनगर,सन्तकबीरनगर, नोयडा सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित

वर्ष : 9 अंक 109 | लखनऊ,बुधवार, 06 नवम्बर, 2019 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2.00

वायु प्रदूषण रोकने व प्रकृति संरक्षण के उपाय

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज

लखनऊ। यह सर्वविदित तथ्य है कि वर्तमान में हो रहे वैश्विक तापमान व जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण विश्व जनसंख्या में बृद्धि है जो पिछले एक सदी के भीतर बहुत अधिक बढ़ गई है। अप्रैल 2019 तक विश्व की जनसंख्या 7.7 बिलियन लोगों की आंकी गई है । जबकि दुनिया की आबादी को 1 बिलियन तक पहुँचाने में मानव इतिहास को 2, 00,000 वर्ष लग गए; और पिछले 200 वर्षो के भीतर ही यह 7 बिलियन तक पहुंच गया। उच्चतम जनसंख्या वृद्धि दर प्रति वर्ष 1.8त्न से 1955 और 1975 के बीच हुई, 1965 और 1970 के बीच 2.1त्न तक बढ़ गई जब 2010 और 2015 के बीच वृद्धि दर घटकर 1.2त्न रह गई और आगे और गिरावट का अनुमान है। हालाँकि, वैश्विक जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है और 2050 में लगभग 10 बिलियन और 2100 में 11 बिलियन से अधिक तक पहुंचने का अनुमान है।आज वैश्विक तापमान व जलवायु परिवर्तन को बढने के दो मुख्यकारक हैं- बाहनो की बढती संख्या मे हाइड्रोकार्बन ईंधन का अनाप-शनाप दोहन व आद्योगिकीकरण की बेतहाशा दौड द्वारा रहन-सहन में परिवर्तन। आज एक तरफ जीवन दायिनी आक्सीजन देने वाले पेडो की कटाई चरम पर है, परंतु उसके लगाने की दर नगण्य है । ऐसे मे प्रकृति में अनावश्यक रूप में छेड-छाड की जा रही है । जबकी हमारे वेदिक ग्रंथो-वेद व पुराण में प्रकृति के संरक्षण के तमाम सुक्तिया दी गई हैं। उदाहरण के तौर पर-

हरे वृक्षों को काटने पर प्रतिबन्धण हमारे धर्मशास्त्रों में वर्णित है, ऐसा कहा गया था ऐसा कार्य करने वाला संतान सुख से हीन होता है, क्योंकि वृक्ष को पुत्र के समान स्थासन दिया गया था। वृक्षों की श्रेष्ठंता के सम्बोन्धध में मतस्यकपुराण में वृक्षों के महत्व का निर्देशन किया गया है।

दश कूपो समो वापी, दश वापी समो ह्रदः।
दशह्रद समः पुत्रों, दश पुत्र समो द्रुयः॥

दश कूप निर्माण का पुण्यस एक वापी बनाने से, दस वापी का पुण्या एक तालाब तथा दस तालाबों का पुण्या एक पुत्र उत्पपन्न॥ करने से दस पुत्रों का पुण्य एक वृक्ष लगाने से होता है।

इसी प्रकार बृक्ष को न काटने हेतु निम्नलिखित सूक्ति भी मिलती है-

मूले ब्रम्हा तने विष्णू, शाखा रूपे महेश्वरो ।
पाते-पाते देवानाम, बृक्ष राजा नमस्तुते ॥

बृक्ष के जड मे ब्रम्हा का निवास होता है जो सृष्टि के रचयिता हैं तथा तने मे विष्णू जो पोषणहार हैं, शाखाओ में शिव का निवास है, जो शक्ति प्रदान करते हैं और पत्तो मे सभी देवी-देवताओ का निवास है जो हमारी रक्षा करते है और धन-धान्य प्रदान करते है , ऐसे बृक्ष देव को हम प्रणाम करते हैं ।

आइये हम आज की समस्या जो विकटरूप में फैली चुकी हुई है, उस पर विचार करे कि यह कैसे उत्पन्न हुई और इसका क्या निदान है।

हम जानते है कि पृथ्वी के चारों तरफ 10-15 कि0मी0 की ऊचाई पर ओजोन (03) की परत फैली हुयी है, जिससे सूर्य से पैरा बैगनी किरणें धरती पर नहीं आती और सभी जीव-जन्तु कैंसर, हृदय रोग, लीवर की बीमारी बच जाते है और फसलों में भी नुकसान नहीं होता।

इसी प्रकार ग्रीन हाउस गैस की अधिकता दिन-प्रतिदिन बढ़ने से 05-10 कि0मी0 की ऊचाई पर धरती के चारों तरफ, ये गैस एकत्रित हो रही है और पृथ्वी पर सूर्य की किरणों से उत्पन्न रेडियेशन ग्रीन हाऊस गैस की मोटी परत से, पुनः धरती पर वापस लौटने से वैश्विक तापमान निरन्तर बढ़ रहा है।

यह भी शोध से ज्ञात हुआ कि जब ''बरसात व ठण्डक'' के मौसम दशहरे और दीवाली के बाद प्रारम्भ होता है, तो वायुमण्डल में उपलब्ध पानी की बूंदे, ओस के रूप में बढ़ी हुयी ग्रीन-हाउस गैस पर दबाव डालती है, जिससे ग्रीन हाउस गैस पृथ्वी के नजदीक आकर फाग (धुंए) के रूप में बढ़ जाती है और हवा में पी0एम0-2.5 धीरे-धीरे बढ़ती रहती है, और दीवाली के पटाखों व पराली जलने से यह समस्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः जब तक इस अन्तराल में, गाड़ियों के आवागमन में कमी नहीं की जायेगी प्रतिदिन का प्रदूषण पी0एम0-2.5 के स्तर को बढ़ाता रहेगा।

इसका विकल्प हैः-

तत्कालिक उपायः-

1. कृत्रिम वारिश करायी जाय
2. सड़को, पेड़ो व घरों आदि के आस-पास पानी का छिड़काव किया जाय।